

गणतंत्र दविस: बहिर की झाँकी

चर्चा में क्यों?

गणतंत्र दविस परेड में बहिर की झाँकी में कषेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक वरिसत को परदर्शति कयि गयि, जसिमें परतीकात्मक रूप से **परतषिठति बोधवृकष** और परसदिध **नालंदा वशिवदियलय** को दर्शायि गयि।

- परदर्शन में बहिर की ऐतहिसकि पहचान को 'बुद्ध की भूमि' और प्राचीन ज्ञान के केंद्र के रूप में उजागर कयि गयि।



मुख्य बदि

- बहिर की झाँकी:**
 - बहिर की झाँकी ने आठ वर्ष के अंतराल के बाद कर्तव्य पथ पर 76वें गणतंत्र दविस परेड में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
 - झाँकी का केंद्रीय वषिय 'स्वर्णमि भारत: वरिसत और वकिस' था और इसमें प्राचीन नालंदा वशिवदियलय के खंडहरों को परमुखता से दिखाया गयि था।
 - झाँकी में **भगवान बुद्ध** की ध्यानमगन धर्मचक्र मुद्रा में स्थापति परतमि को दर्शायि गयि, जो शांति और सद्भाव का परतीक है। परतमि का मूल स्थान राजगीर में घोडा कटोरा जलाशय है।
 - बहिर की झाँकी ने राज्य की ज्ञान और शांतिकी परंपरा को उजागर कयि तथा ज्ञान, मोक्ष और शांतिकी भूमि के रूप में इसकी ऐतहिसकि पहचान पर ज़ोर दयि गयि।
- ऐतहिसकि एवं सांस्कृतिक स्थलों का चतिरण:**
 - झाँकी में बोधगया के पवतिर बोधि वृकष, जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था और सम्राट कुमारगुप्त द्वारा 427 ई. में स्थापति नालंदा वशिवदियलय के प्राचीन खंडहरों का चतिरण शामिल था।
 - झाँकी ने वशिव के पहले आवासीय वशिवदियलय के रूप में नालंदा वशिवदियलय की भूमिका पर ज़ोर दयि, जो ज्ञान का वैश्विक केंद्र था, जो चीन, कोरिया, जापान, तबिबत और अन्य स्थानों से वदिवानों को आकर्षति करता था।
- भतित चतिर और आधुनिक नवाचार:**
 - झाँकी के पार्श्व पैनल पर भतितचतिरों में **चंद्रगुप्त मौर्य** के मार्गदर्शक **चाणक्य** के योगदान को दर्शायि गयि है तथा प्राचीन वैदिक

- सभाओं के दृश्यों को दर्शाया गया है, जिसमें लोकतांत्रिक शासन और न्यायिक प्रणालियों को दर्शाया गया।
- एक अन्य भित्तिचित्र में 'गुरु-शषिय' परंपरा तथा गणति में आर्यभट्ट के योगदान पर प्रकाश डाला गया।
 - एक LED स्क्रीन पर नवनर्मित नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय परिसर को प्रदर्शित किया गया, जैसे कार्बन-तटस्थ और शुद्ध-शून्य स्तरिता लक्ष्यों के साथ डिज़ाइन किया गया है, जो आधुनिक शैक्षिक प्रगति को दर्शाता है।



गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों (दशावतार) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

जन्म

- सिद्धार्थ के रूप में जन्म (563 ईसा पूर्व)
- जन्मस्थान- लुम्बिनी (नेपाल)
कपिलवस्तु के निकट

माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक;
शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी



महत्त्वपूर्ण घटनाएँ



The timeline consists of five circular icons connected by a wavy line, representing key events in Buddha's life: 1. Birth (Lotus icon), 2. Great Renunciation (Horse icon), 3. Enlightenment (Bowl icon), 4. First Sermon (Wheel icon), 5. Death (Stupa icon).

बुद्ध ने स्वयं को तथागत (वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया (ज्ञान प्राप्ति) (ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए)
- सारनाथ (प्रथम उपदेश)
- वैशाली (अंतिम उपदेश)
- कुशीनगर (मृत्यु (487 ई.पू.) का स्थान)